कुषाण काल में कला एवं स्थापत्य का विकास

प्रस्तावना

कुषाण काल जो लगभग प्रथम शताब्दी ईस्वी से तीसरी शताब्दी ईस्वी तक रहा, भारतीय कला और स्थापत्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। मध्य एशिया से आए कुषाण शासकों ने विशेष रूप से कनिष्क के नेतृत्व में भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी और पश्चिमी भागों पर शासन किया। इस काल में बौद्ध धर्म का व्यापक विस्तार हुआ और बुद्ध की मूर्तियों का निर्माण पहली बार बड़े पैमाने पर प्रारंभ हुआ। कुषाण काल में दो प्रमुख कला शैलियां विकसित हुईं - गांधार शैली और मथुरा शैली। गांधार शैली जो पेशावर, तक्षशिला और अफगानिस्तान के क्षेत्र में विकसित हुई, ग्रीको-रोमन प्रभाव से युक्त थी जबकि मथुरा शैली पूर्णतः भारतीय परंपरा से विकसित हुई। इन दोनों शैलियों ने भारतीय कला को नई दिशा दी और बाद की कला परंपराओं को गहराई से प्रभावित किया।

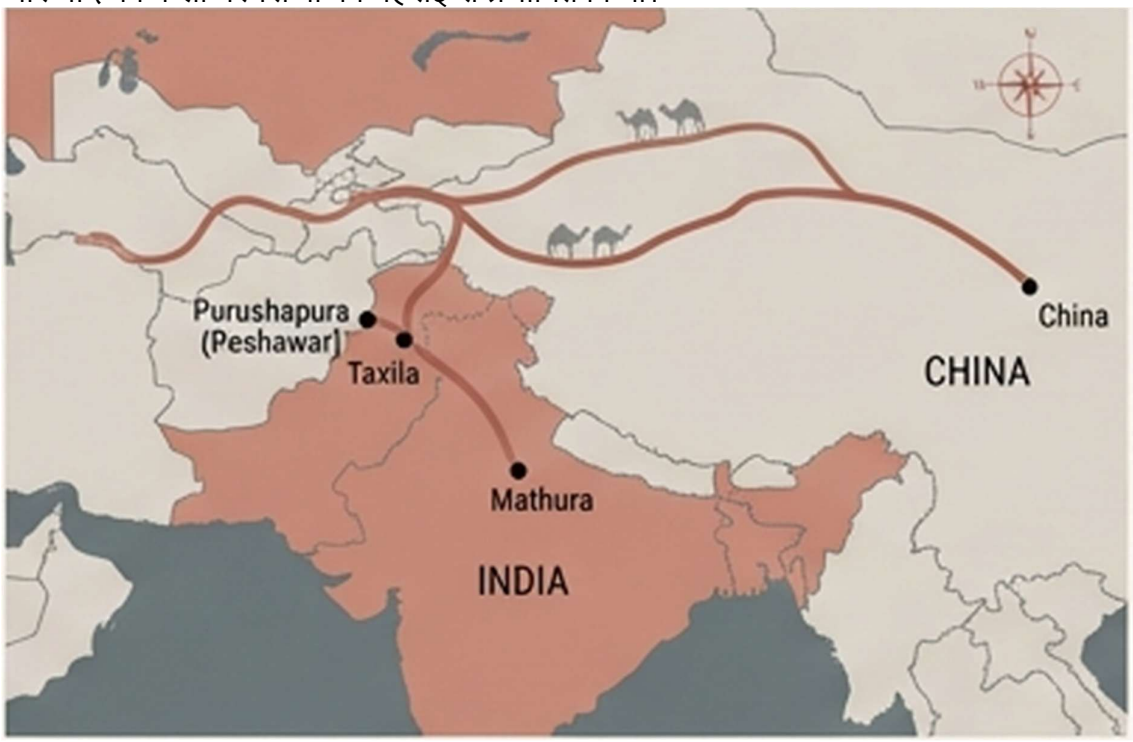

कुषाण काल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

कुषाण वंश की स्थापना कुजुल कडफिसेस ने की थी परन्तु इस वंश का सबसे महान शासक कनिष्क था जिसका शासनकाल लगभग 78 ईस्वी से 101 ईस्वी तक माना जाता है। कनिष्क ने पुरुषपुर (आधुनिक पेशावर) को अपनी राजधानी बनाया और मथुरा को द्वितीय राजधानी का दर्जा दिया। कुषाण शासक बौद्ध धर्म के महान संरक्षक थे। कनिष्क ने चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन कश्मीर में करवाया जिसमें महायान बौद्ध धर्म का विकास हुआ। कुषाण साम्राज्य व्यापारिक मार्गों के नियंत्रण के कारण अत्यंत समृद्ध था और इस आर्थिक समृद्धि ने कला और स्थापत्य को संरक्षण प्रदान किया।

कुषाण काल में स्थापत्य का विकास

➔ **स्तूप निर्माण**

कुषाण काल में स्तूप निर्माण की परंपरा अपने चरम पर पहुंची। कनिष्क का स्तूप पेशावर में बनाया गया था जो अपने विशाल आकार के लिए प्रसिद्ध था। चीनी यात्री फाह्यान और ह्वेनसांग के विवरणों से पता चलता है कि यह स्तूप लगभग 400 फीट ऊंचा था और इसमें 13 छत्रियां थीं। यद्यपि यह स्तूप अब नष्ट हो चुका है परन्तु इसके अवशेषों से पता चलता है कि यह एक भव्य संरचना थी। तक्षशिला में धर्मराजिका स्तूप और जौलियां स्तूप भी इसी काल के महत्वपूर्ण स्मारक हैं। मथुरा में भी अनेक स्तूप बनाए गए।

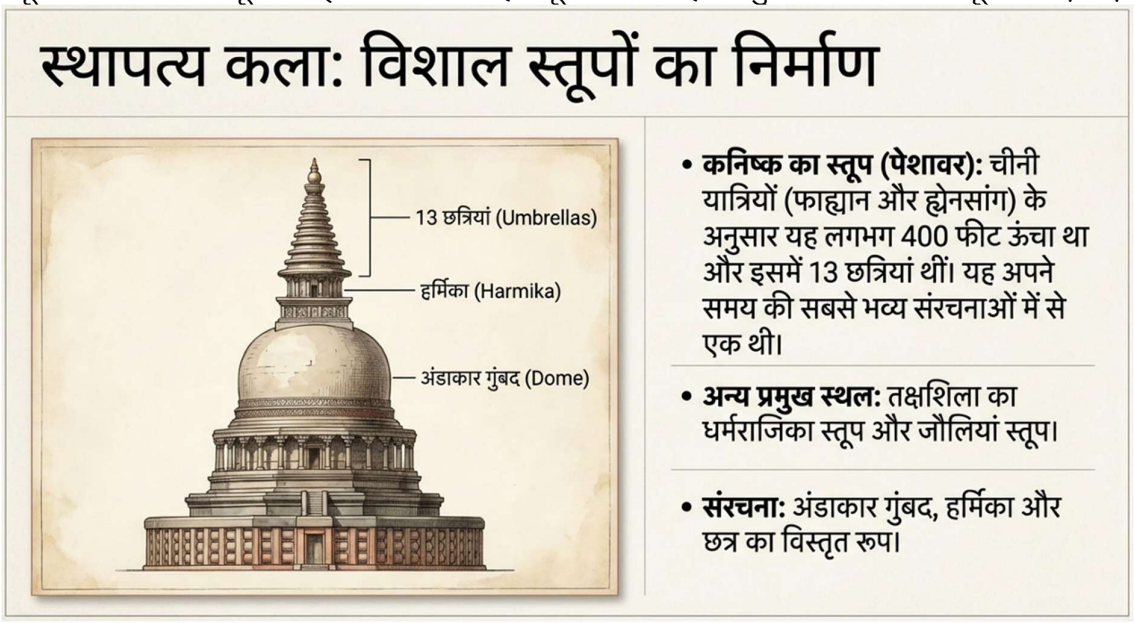

➔ विहार और मठ

कुषाण काल में बौद्ध विहारों का निर्माण व्यापक पैमाने पर हुआ। तक्षशिला में जौलियां, मोहरा मोराडु और धर्मराजिका में विहारों के अवशेष मिले हैं। ये विहार भिक्षुओं के निवास और अध्ययन के लिए बनाए गए थे। विहारों में कोठरियां, प्रार्थना कक्ष और स्तूप होते थे। पत्थर और ईंट दोनों का उपयोग निर्माण में होता था।

➔ चैत्य गृह

बौद्ध पूजा के लिए चैत्य गृह भी बनाए गए। इनमें अर्ध-गोलाकार स्तूप होता था और इसके चारों ओर स्तंभों की पंक्तियां होती थीं। कार्ले का चैत्य यद्यपि सातवाहन काल का है परन्तु कुषाण काल में भी इस परंपरा का विकास हुआ।

गांधार कला शैली की विशेषताएं

➔ भौगोलिक विस्तार और उत्पत्ति

गांधार कला शैली मुख्यतः पेशावर, तक्षशिला, स्वात घाटी और अफगानिस्तान के क्षेत्रों में विकसित हुई। यह क्षेत्र सिकंदर के आक्रमण के बाद यूनानी प्रभाव में आ गया था और बाद में बैक्ट्रियन यूनानियों और कुषाणों ने यहां शासन किया। इस कारण यहां की कला में ग्रीको-रोमन प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। गांधार शैली को ग्रीको-बुद्धिस्ट या हेलेनिस्टिक-बुद्धिस्ट शैली भी कहा जाता है।

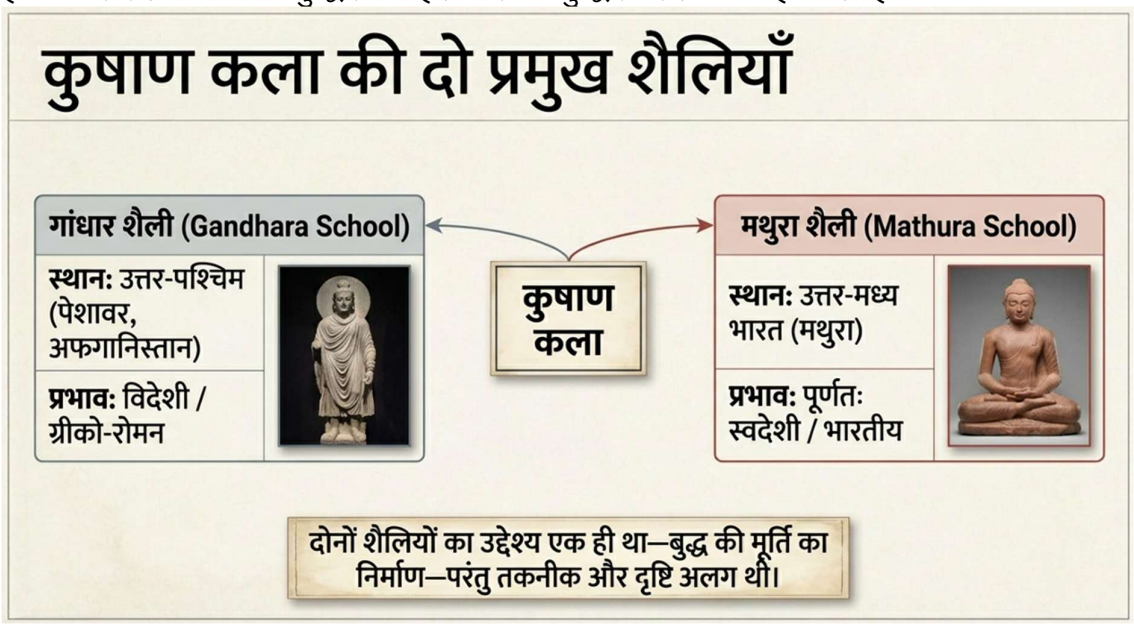

➔ बुद्ध की मूर्ति निर्माण

गांधार शैली की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि बुद्ध की मानवीय रूप में मूर्ति का निर्माण है। इससे पूर्व बुद्ध को प्रतीकों जैसे पद चिह्न, बोधि वृक्ष, धर्म चक्र या रिक्त सिंहासन द्वारा दर्शाया जाता था। गांधार में पहली बार बुद्ध को मानव रूप में दिखाया गया। बुद्ध की मूर्तियों में यूनानी देवता अपोलो की विशेषताएं दिखाई देती हैं। बुद्ध को लहरदार बाल, सीधी नाक, गोल चेहरा और ग्रीक वस्त्र पहने हुए दिखाया गया है।

शारीरिक संरचना यथार्थवादी और शारीरिक रूप से सही अनुपात में है।

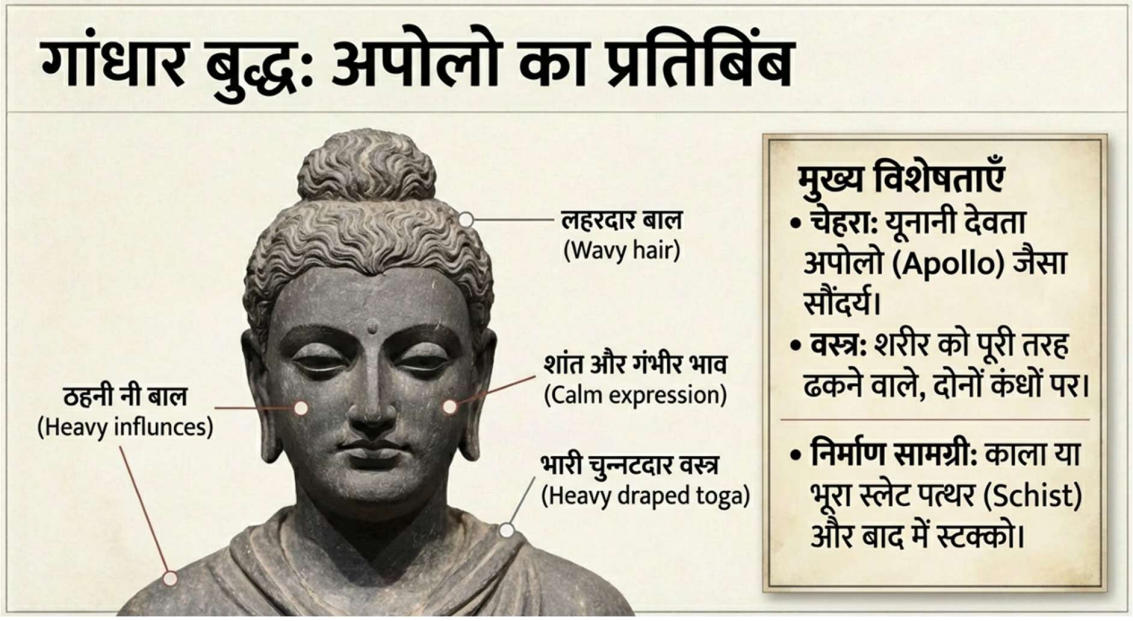

➔ निर्माण सामग्री

गांधार मूर्तिकला में मुख्यतः स्लेट पत्थर और स्टक्को (संगमरमर और चूने का मिश्रण) का उपयोग हुआ। काले और भूरे स्लेट पत्थर पर बारीक नक्काशी की गई। स्टक्को का प्रयोग विशेष रूप से अफगानिस्तान के हद्दा और बामियान क्षेत्रों में हुआ जहां विशाल बुद्ध प्रतिमाएं बनाई गईं।

➔ कथात्मक मूर्तिकला

गांधार शैली में बुद्ध के जीवन की विभिन्न घटनाओं को मूर्ति पटलों पर उकेरा गया। जन्म, महाभिनिष्क्रमण, ज्ञान प्राप्ति, प्रथम उपदेश और महापरिनिर्वाण जैसे दृश्यों को विस्तार से चित्रित किया गया। जातक कथाओं को भी मूर्तिकला में दर्शाया गया। ये कथात्मक पटल रोमन साम्राज्य की कला से प्रभावित थे।

➔ सजावटी तत्व

गांधार कला में यूनानी सजावटी तत्वों का प्रचुर उपयोग हुआ। कोरिन्थियन स्तंभ, एकेन्थस पत्तियां, अंगूर की बेलें, अमृत कलश और पुष्पहार जैसे ग्रीको-रोमन अलंकरण दिखाई देते हैं। पंखदार स्वर्गदूत (Cherubs) और यूनानी देवताओं की आकृतियां भी कभी-कभी उकेरी गई हैं।

➔ यथार्थवाद

गांधार मूर्तिकला में यथार्थवाद प्रमुख है। मानव शरीर की मांसपेशियां, वस्त्रों की सिलवटें और चेहरे के भाव बहुत स्पष्ट रूप से उकेरे गए हैं। वस्त्र शरीर से चिपके हुए दिखाए गए हैं जो ग्रीक परंपरा की विशेषता है।

मथुरा कला शैली की विशेषताएं

➔ देशी परंपरा का विकास

मथुरा कला शैली पूर्णतः भारतीय परंपरा से विकसित हुई। यद्यपि यह भी कुषाण काल में फली-फूली परन्तु इसमें विदेशी प्रभाव नहीं था। मथुरा प्राचीन काल से ही एक महत्वपूर्ण कला केंद्र था और यहां की कला परंपरा का विकास शुंग और सातवाहन काल से चला आ रहा था।

➔ बुद्ध की भारतीय प्रतिमा

मथुरा में भी बुद्ध की मानवीय रूप में मूर्तियां बनीं परन्तु ये गांधार शैली से पूर्णतः भिन्न थीं। मथुरा के बुद्ध में भारतीय शारीरिक विशेषताएं हैं - गोल चेहरा, चौड़े कंधे, शक्तिशाली शरीर और सुडौल अंग। बुद्ध के बालों को घुंघराले दिखाया गया है जो उष्णीष में समाप्त होते हैं। वस्त्र पतले और पारदर्शी हैं जो शरीर को ढकते हुए भी उसकी संरचना को दिखाते हैं। दाहिने कंधे को खुला रखा जाता था।

➔ लक्षण और प्रतीक

मथुरा शैली में बुद्ध के महापुरुष लक्षणों को महत्व दिया गया। माथे पर उर्णा (तिल), सिर पर उष्णीष (गांठ), लंबे कान, हाथों और पैरों में चक्र चिह्न आदि को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया। ये लक्षण भारतीय परंपरा के अनुसार हैं।

➔ निर्माण सामग्री

मथुरा शैली में लाल चित्तीदार बलुआ पत्थर का उपयोग हुआ जो मथुरा और उसके आसपास के क्षेत्रों में मिलता है। यह पत्थर अपेक्षाकृत नरम है और इस पर बारीक नक्काशी करना आसान है। पत्थर का लाल रंग मूर्तियों को एक विशिष्ट पहचान देता है।

➔ जैन और हिंदू मूर्तिकला

मथुरा कला की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यहां केवल बौद्ध मूर्तियां ही नहीं बल्कि जैन तीर्थंकरों और हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियां भी बनाई गईं। कुषाण काल के तीर्थंकर पार्श्वनाथ की मूर्ति, यक्ष-

यक्षिणी की प्रतिमाएं और शिव, विष्णु आदि देवताओं की मूर्तियां मिली हैं। यह धार्मिक सहिष्णुता और विविधता को दर्शाता है।

➔ स्त्री मूर्तियां

मथुरा शैली में यक्षिणी और देवी मूर्तियां अत्यंत सुंदर हैं। इनमें भारतीय स्त्री सौंदर्य का आदर्श प्रस्तुत किया गया है। शरीर में लावण्य, त्रिभंग मुद्रा, सुंदर आभूषण और कोमल भाव इन मूर्तियों की विशेषता है।

➔ कुषाण राजाओं की मूर्तियां

मथुरा में कुषाण शासकों की भी मूर्तियां बनाई गईं। कनिष्क की खड़ी प्रतिमा जो मथुरा संग्रहालय में है, इसका उदाहरण है। यद्यपि मूर्ति का सिर नहीं मिला है परन्तु शरीर की बनावट से कुषाण वेशभूषा का पता चलता है - लंबा कोट, भारी जूते और तलवार।

गांधार और मथुरा शैलियों की तुलना

➔ उत्पत्ति और प्रभाव

गांधार शैली विदेशी विशेष रूप से ग्रीको-रोमन प्रभाव से विकसित हुई जबकि मथुरा शैली पूर्णतः स्वदेशी और भारतीय परंपरा का विकास थी। गांधार में बाहरी तत्वों को भारतीय विषयों पर लागू किया गया जबकि मथुरा में भारतीय तकनीक और भारतीय विषयों का समन्वय था।

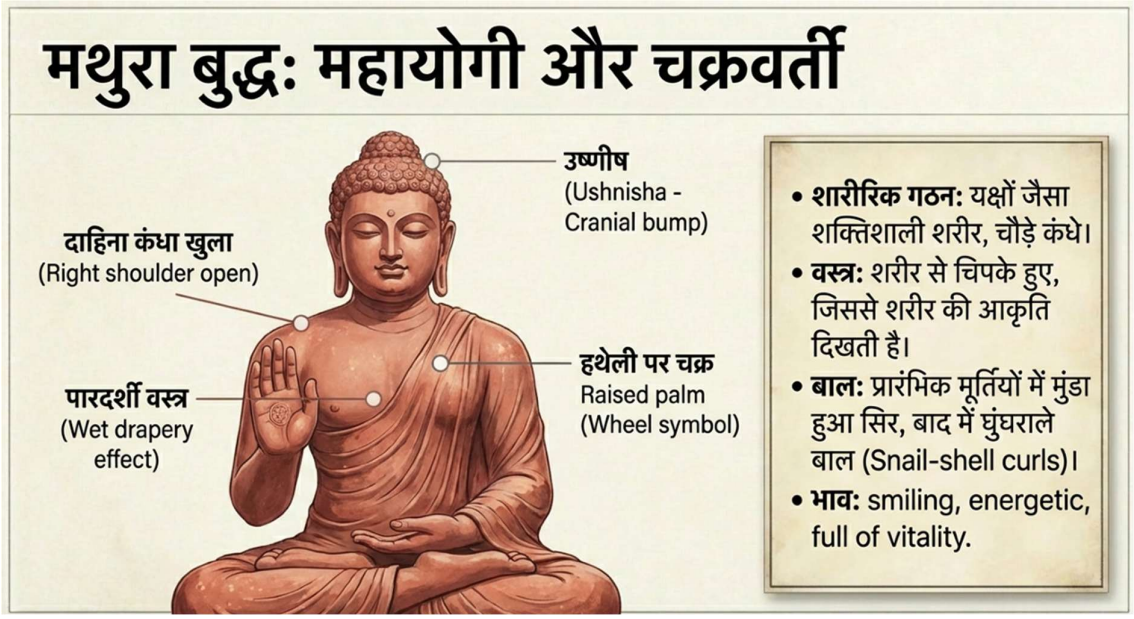

➔ बुद्ध प्रतिमा की तुलना

गांधार के बुद्ध में यूनानी देवता जैसे लक्षण हैं - लहरदार बाल, सीधी नाक, ग्रीक वस्त्र और आदर्शीकृत सौंदर्य। मथुरा के बुद्ध में भारतीय विशेषताएं हैं - घुंघराले बाल जो उष्णीष में बदलते हैं, चौड़ा चेहरा, शक्तिशाली शरीर और पारदर्शी वस्त्र। गांधार के बुद्ध अधिक ध्यानमग्न और गंभीर दिखते हैं जबकि मथुरा के बुद्ध में जीवन शक्ति और ऊर्जा अधिक है।

➔ निर्माण सामग्री

गांधार में स्लेट पत्थर और स्टक्को का उपयोग हुआ जो भूरे और काले रंग के थे। मथुरा में लाल चित्तीदार बलुआ पत्थर का प्रयोग हुआ जो अधिक जीवंत और गर्म अनुभव देता है।

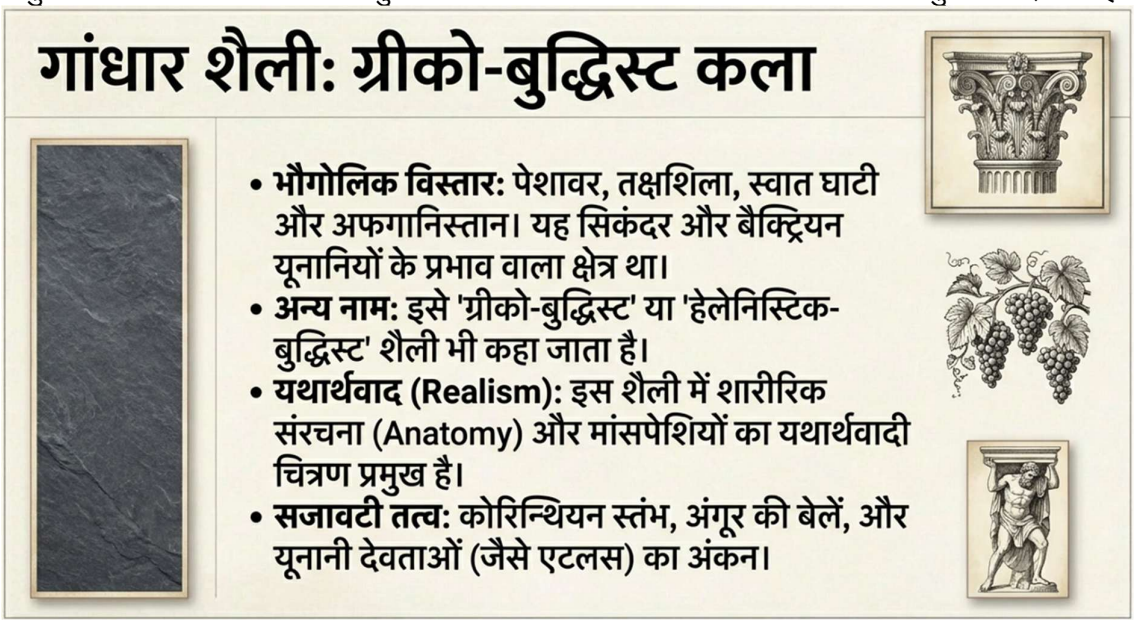

➔ वस्त्र चित्रण

गांधार में वस्त्र शरीर से चिपके हुए दिखाए गए हैं जिससे शरीर की संरचना स्पष्ट दिखती है। वस्त्रों की सिलवटें बहुत बारीक उकेरी गई हैं। मथुरा में वस्त्र पतले और पारदर्शी हैं परन्तु वे शरीर की आकृति का अनुसरण नहीं करते बल्कि स्वतंत्र रूप से लटकते हैं।

➔ आध्यात्मिक बनाम भौतिक

गांधार शैली अधिक आध्यात्मिक और अलौकिक अनुभव देती है। बुद्ध को एक दिव्य सत्ता के रूप में दिखाया गया है। मथुरा शैली अधिक भौतिक और जीवंत है। बुद्ध को एक महान मानव के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसमें दैवीय गुण हैं परन्तु वह मानवीय भी है।

➔ धार्मिक विविधता

गांधार शैली मुख्यतः बौद्ध धर्म तक सीमित थी। मथुरा में बौद्ध, जैन और हिंदू तीनों धर्मों की मूर्तियां बनाई गईं जो इसकी व्यापकता को दर्शाता है।

➔ कुषाण कला का प्रभाव और विरासत

गांधार और मथुरा दोनों शैलियों ने भारतीय कला को गहराई से प्रभावित किया। मथुरा शैली ने सारनाथ, अमरावती और श्रीलंका की कला को प्रभावित किया। गुप्त काल की मूर्तिकला मथुरा और सारनाथ परंपरा का विकसित रूप है। गांधार शैली मध्य एशिया, चीन, जापान और दक्षिण पूर्व एशिया में फैली। बामियान की विशाल बुद्ध प्रतिमाएं गांधार परंपरा का विस्तार थीं। चीन और जापान में बुद्ध की मूर्तियों में गांधार प्रभाव दिखाई देता है।

दोनों शैलियों ने बुद्ध की मानवीय प्रतिमा की परंपरा स्थापित की जो बाद में संपूर्ण बौद्ध जगत में अपनाई गई। महायान बौद्ध धर्म के विकास में इन मूर्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका थी क्योंकि बुद्ध की पूजा अब मूर्ति रूप में संभव हो गई।

निष्कर्ष

कुषाण काल भारतीय कला और स्थापत्य के इतिहास में एक क्रांतिकारी युग था। इस काल में बुद्ध की मानवीय रूप में मूर्ति का निर्माण पहली बार हुआ जो बौद्ध कला के विकास में मील का पत्थर साबित हुआ। गांधार और मथुरा दो प्रमुख कला केंद्रों के रूप में उभरे जिनकी शैलियां भिन्न परन्तु समान रूप से महत्वपूर्ण थीं।

गांधार शैली ने ग्रीको-रोमन तकनीक को भारतीय धार्मिक विषयों पर लागू कर सांस्कृतिक समन्वय का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। मथुरा शैली ने भारतीय परंपरा को आगे बढ़ाते हुए एक स्वदेशी कला शैली विकसित की जो बाद में गुप्त कला का आधार बनी। दोनों शैलियों ने अपने-अपने तरीके से बौद्ध कला को समृद्ध किया।

कुषाण काल की कला केवल धार्मिक अभिव्यक्ति नहीं थी बल्कि यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान, तकनीकी उत्कृष्टता और कलात्मक नवाचार का प्रतीक थी। यह काल दर्शाता है कि कला सीमाओं को पार करती है और विभिन्न संस्कृतियां मिलकर श्रेष्ठ कला को जन्म दे सकती हैं। गांधार और मथुरा की विरासत आज भी भारतीय कला में जीवित है और यह हमें सिखाती है कि समन्वय और विविधता कला की शक्ति हैं।

गुप्त कालीन कला एवं स्थापत्य

प्रस्तावना

गुप्त काल (लगभग 320 ईस्वी से 550 ईस्वी) को भारतीय इतिहास का स्वर्णिम युग कहा जाता है। चन्द्रगुप्त प्रथम द्वारा स्थापित इस वंश ने समुद्रगुप्त और चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) के शासनकाल में राजनीतिक एकता, आर्थिक समृद्धि और सांस्कृतिक उत्कर्ष का अद्भुत संगम देखा। कला और स्थापत्य के क्षेत्र में यह काल अपनी परिपक्वता, संतुलन और सौंदर्यबोध के लिए विख्यात है। गुप्त कला ने भारतीय शैली को उसके शुद्धतम और सर्वोत्कृष्ट रूप में प्रस्तुत किया जहां आध्यात्मिकता और भौतिक सौंदर्य का

सुंदर संतुलन था। सारनाथ का बुद्ध, देवगढ़ का दशावतार मंदिर और अजंता की गुफाओं की चित्रकारी गुप्त कला की उत्कृष्टता के जीवंत प्रमाण हैं। इस काल में हिंदू मंदिर स्थापत्य का विकास प्रारंभ हुआ जिसने बाद की स्थापत्य परंपराओं की नींव रखी।

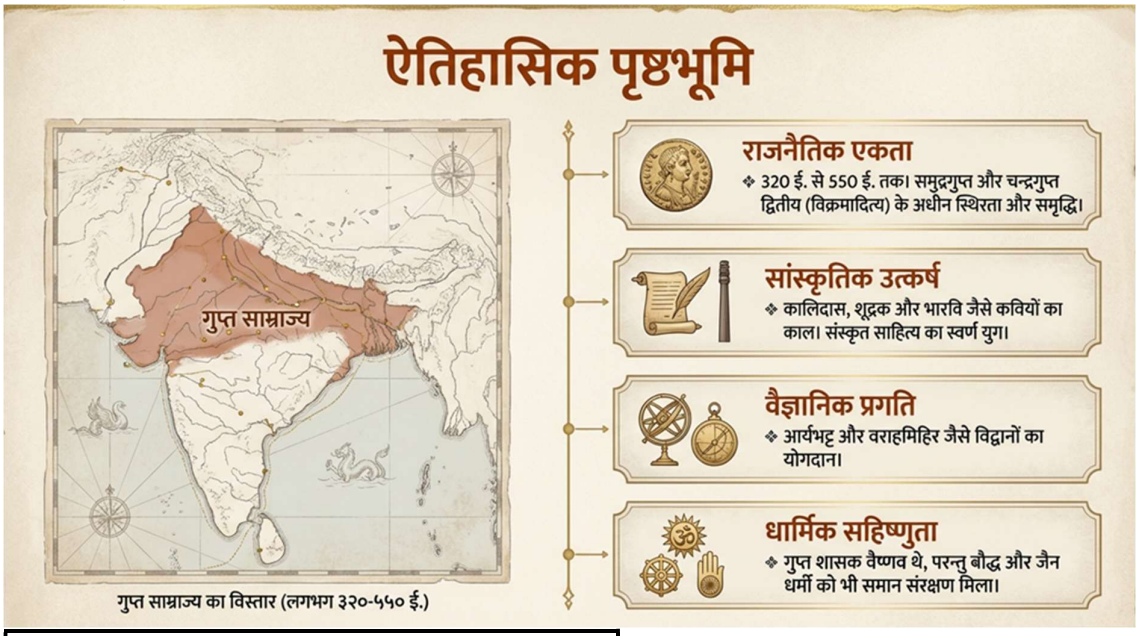

गुप्त काल की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

गुप्त शासकों ने ब्राह्मण धर्म को संरक्षण दिया परन्तु धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई। बौद्ध और जैन धर्मों को भी समान सम्मान मिला। यह काल संस्कृत साहित्य का स्वर्ण युग था जब कालिदास, शूद्रक और भारवि जैसे महान कवि और नाटककार फले-फूले। विज्ञान, गणित और खगोल विज्ञान में भी महत्वपूर्ण उपलब्धियां हुईं। आर्यभट्ट और वराहमिहिर इसी काल के विद्वान थे। इस सांस्कृतिक और बौद्धिक समृद्धि ने कला को भी प्रभावित किया और गुप्त कला में परिपक्वता, संतुलन और आध्यात्मिक गहराई दिखाई देती है।

गुप्त मूर्तिकला की प्रमुख विशेषताएं

➔ आध्यात्मिक शांति और ध्यानस्थता

गुप्त काल की मूर्तिकला की सबसे विशिष्ट पहचान आध्यात्मिक शांति और ध्यानस्थता का भाव है। मूर्तियों के चेहरे पर गहन शांति, आंतरिक प्रसन्नता और दिव्य तेज दिखाई देता है। आंखें अर्ध मुंदित हैं जो ध्यान की अवस्था को दर्शाती हैं। मुख पर मंद मुस्कान है जो आंतरिक आनंद को प्रकट करती है। यह आध्यात्मिकता गुप्त कला को कुषाण काल की भौतिक यथार्थवादिता से अलग करती है।

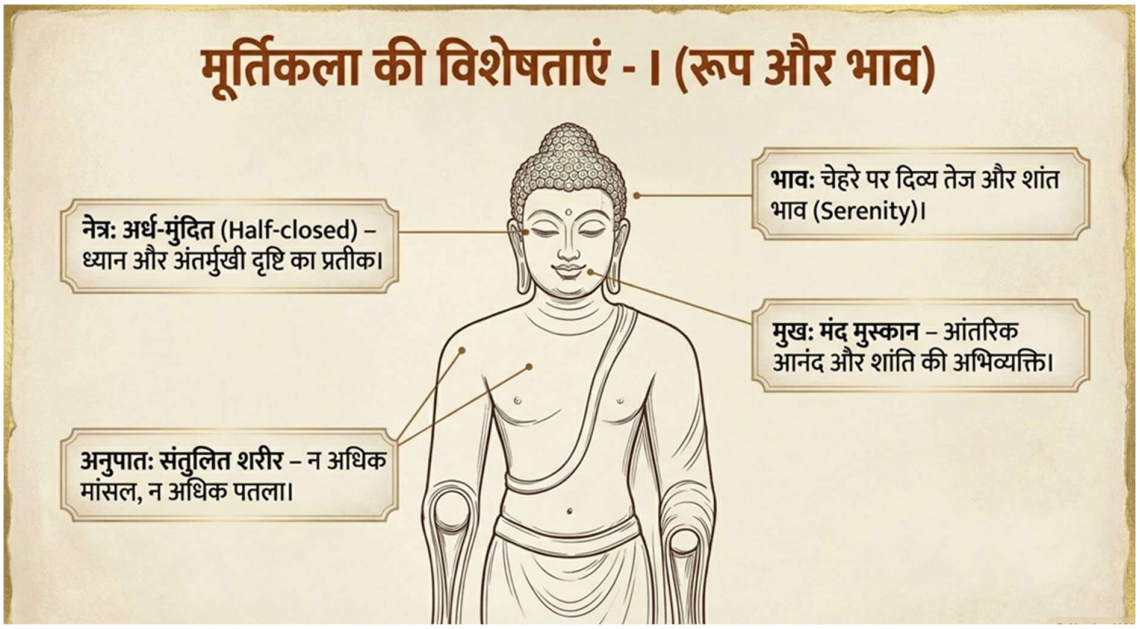

➔ संतुलन और अनुपात की पूर्णता

गुप्त मूर्तिकला में शारीरिक अनुपात का पूर्ण संतुलन मिलता है। शरीर के विभिन्न अंग सही अनुपात में हैं। मूर्तियां न अत्यधिक पतली हैं न मोटी, न बहुत लंबी हैं न बहुत छोटी। कंधे चौड़े परन्तु अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं, कमर पतली परन्तु कमजोर नहीं। यह संतुलन मूर्तियों को सौंदर्यपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण बनाता है। यह भारतीय सौंदर्यशास्त्र के सिद्धांतों के अनुरूप है।

➔ कोमलता और लावण्य

गुप्त मूर्तिकला में कोमलता विशेष रूप से दिखाई देती है। शरीर की रेखाएं मुलायम और प्रवाहमान हैं। कठोरता और तीक्ष्णता का अभाव है। देवी मूर्तियों में स्त्री सुलभ कोमलता और लावण्य है। वस्त्र पतले और शरीर से चिपके हुए हैं जो शारीरिक सौंदर्य को उजागर करते हैं परन्तु अश्लीलता नहीं है। यह कोमलता आध्यात्मिक कोमलता का भी प्रतीक है।

➔ निर्माण सामग्री और तकनीक

गुप्त काल में मुख्यतः चुनार का बलुआ पत्थर और कहीं-कहीं कांस्य का उपयोग हुआ। चुनार का पत्थर हल्के रंग का और उच्च गुणवत्ता का है जिस पर बारीक नक्काशी संभव है। मूर्तियों पर की गई पॉलिश इतनी उत्कृष्ट है कि आज भी चमक बरकरार है। पत्थर को तराशने की तकनीक अत्यंत विकसित थी।

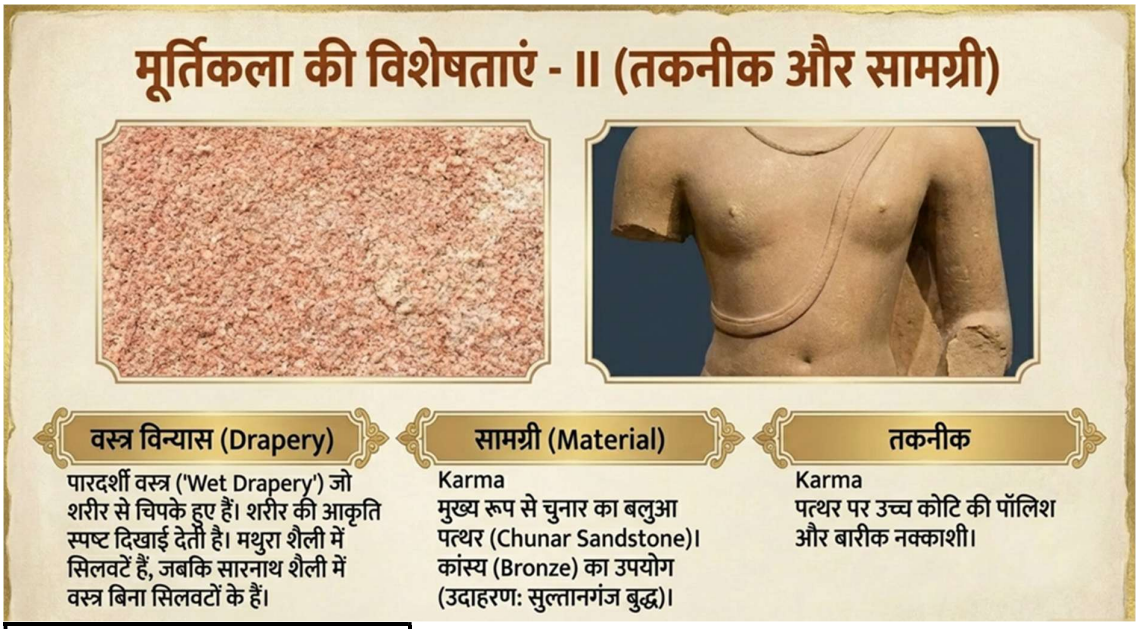

प्रमुख गुप्त मूर्तिकला के उदाहरण

➔ **सारनाथ का बुद्ध**

सारनाथ का बुद्ध गुप्त मूर्तिकला की सर्वोत्कृष्ट कृति है। यह बुद्ध को धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में दर्शाता है। चेहरे पर गहन शांति और दिव्य तेज है। आंखें अर्ध मुंदित हैं और होठों पर मंद मुस्कान है। शरीर सही अनुपात में है और वस्त्र इतने पतले हैं कि शरीर की आकृति स्पष्ट दिखती है परन्तु वस्त्रों की सिलवटें बिल्कुल नहीं हैं। पीछे प्रभामंडल है जिस पर बारीक अलंकरण है। सिंहासन के नीचे धर्मचक्र और हिरण उकेरे गए हैं जो प्रथम उपदेश का प्रतीक हैं। यह मूर्ति आध्यात्मिक पूर्णता का प्रतीक है।

➔ **मथुरा की मूर्तिकला**

मथुरा गुप्त काल में भी एक प्रमुख कला केंद्र बना रहा। यहां की बुद्ध मूर्तियां सारनाथ से थोड़ी भिन्न हैं। शरीर अधिक मांसल है और वस्त्रों में कुछ सिलवटें दिखाई देती हैं। मथुरा में जैन तीर्थंकरों और हिंदू देवी-देवताओं की भी उत्कृष्ट मूर्तियां बनीं।

➔ हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियां

गुप्त काल में विष्णु, शिव, दुर्गा और अन्य देवी-देवताओं की अनेक मूर्तियां बनाई गईं। देवगढ़ मंदिर में विष्णु की शयन मुद्रा में मूर्ति अत्यंत सुंदर है। शिव की अर्धनारीश्वर मूर्तियां भी इस काल की विशेषता हैं जिनमें शिव और पार्वती के संयुक्त रूप को दर्शाया गया है। महिषासुरमर्दिनी दुर्गा की मूर्तियां शक्ति और सौंदर्य का संतुलन प्रस्तुत करती हैं।

➔ सुल्तानगंज का कांस्य बुद्ध

बिहार के सुल्तानगंज से प्राप्त कांस्य बुद्ध की मूर्ति लगभग 7.5 फीट ऊंची है और गुप्त काल की कांस्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह मूर्ति बर्मिंघम संग्रहालय में सुरक्षित है। कांस्य ढलाई की तकनीक अत्यंत विकसित थी।

गुप्त काल में मंदिर स्थापत्य का विकास

➔ मंदिर स्थापत्य का प्रारंभ

गुप्त काल में पहली बार पत्थर से बने स्थायी हिंदू मंदिरों का निर्माण व्यापक पैमाने पर हुआ। इससे पूर्व मंदिर संभवतः लकड़ी और ईंट के बनते थे जो नष्ट हो गए। गुप्त मंदिर सरल और छोटे आकार के थे परन्तु इन्होंने बाद की मंदिर स्थापत्य की नींव रखी। गुप्त मंदिरों में मुख्यतः तीन प्रकार की योजनाएं मिलती हैं - सपाट छत वाले, शिखर वाले और वर्गाकार गर्भगृह वाले।

➔ मंदिर की मूल संरचना

गुप्तकालीन मंदिर में एक वर्गाकार गर्भगृह होता था जहां मुख्य देवता की मूर्ति स्थापित होती थी। गर्भगृह के सामने एक मंडप या बरामदा होता था। कुछ मंदिरों में प्रदक्षिणा पथ भी बना होता था। मंदिर एक ऊंचे चबूतरे पर बनाया जाता था जिसे जगती कहते हैं। प्रवेश द्वार पर भव्य अलंकरण होता था जिसमें नदी देवियां गंगा और यमुना की मूर्तियां प्रमुख थीं।

प्रमुख गुप्तकालीन मंदिर

➔ **देवगढ़ का दशावतार मंदिर**

उत्तर प्रदेश के झांसी जिले में स्थित दशावतार मंदिर गुप्त मंदिर स्थापत्य का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। यह विष्णु को समर्पित है और 5वीं शताब्दी में बना था। मंदिर वर्गाकार गर्भगृह के चारों ओर प्रदक्षिणा पथ के साथ बना है। गर्भगृह की तीन दीवारों पर विष्णु से संबंधित तीन महत्वपूर्ण दृश्य उकेरे गए हैं - शेषशायी विष्णु, गजेन्द्र मोक्ष और नर-नारायण तपस्या। ये पैनल उच्च कोटि की मूर्तिकला के नमूने हैं। प्रवेश द्वार पर गंगा-यमुना की मूर्तियां हैं। मंदिर का शिखर अब नष्ट हो चुका है परन्तु अवशेषों से पता चलता है कि यह एक ऊंचे शिखर के साथ बना था।

➔ भितरगांव का मंदिर

उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले में भितरगांव का मंदिर ईंट से बना है और गुप्त काल के प्रारंभिक मंदिरों में से एक है। इसमें ऊंचा शिखर है जो बाद के मंदिरों का पूर्ववर्ती है। दीवारों पर मूर्तियां उकेरी गई हैं।

➔ तिगवा का विष्णु मंदिर

मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में तिगवा का मंदिर एक सरल वर्गाकार संरचना है जिसमें सपाट छत है। यह गुप्त मंदिरों की प्रारंभिक शैली को दर्शाता है।

➔ भूमरा का शिव मंदिर

मध्य प्रदेश में भूमरा का मंदिर शिव को समर्पित है। इसमें प्रदक्षिणा पथ है और दीवारों पर सुंदर मूर्तियां उकेरी गई हैं।

➔ नचना कुठार का पार्वती मंदिर

मध्य प्रदेश में स्थित यह मंदिर एक ऊंचे चबूतरे पर बना है। इसकी स्थापत्य शैली उन्नत है।

➔ एहोल के मंदिर

कर्नाटक में एहोल के मंदिर यद्यपि चालुक्य काल के हैं परन्तु गुप्त प्रभाव दर्शाते हैं। लाड खान मंदिर और दुर्गा मंदिर में गुप्त शैली के तत्व हैं।

गुप्त मंदिर स्थापत्य की विशेषताएं

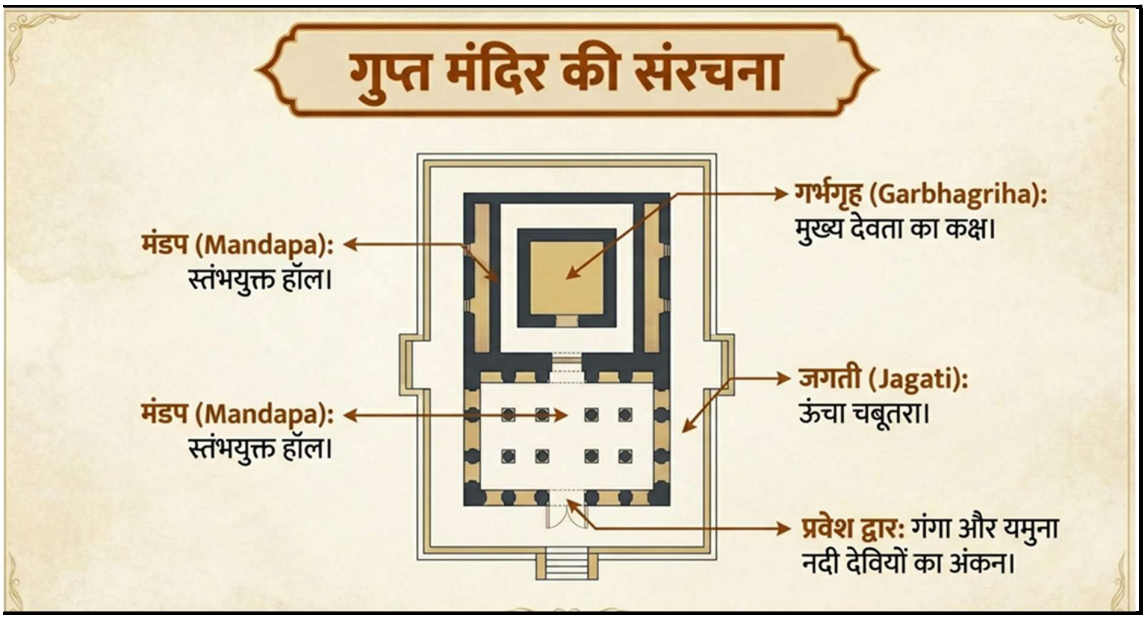

➔ सादगी और संतुलन

गुप्त मंदिर सरल और संतुलित हैं। इनमें बाद के मंदिरों जैसी जटिलता नहीं है। आकार छोटा है परन्तु अनुपात सही है। अलंकरण है परन्तु अत्यधिक नहीं। यह सादगी और संतुलन गुप्त कला की विशेषता है।

➔ मूर्तिकला का समावेश

गुप्त मंदिरों में स्थापत्य और मूर्तिकला का सुंदर संगम है। दीवारों पर पौराणिक कथाओं के दृश्य उकेरे गए हैं। द्वारपाल, मिथुन मूर्तियां, नदी देवियां और अलंकरण मंदिर के सौंदर्य को बढ़ाते हैं। मूर्तिकला केवल सजावट नहीं बल्कि स्थापत्य का अभिन्न अंग है।

➔ शिखर का विकास

गुप्त काल में मंदिर शिखर का विकास हुआ। भितरगांव और देवगढ़ के मंदिरों में शिखर के प्रमाण मिलते हैं। यह शिखर बाद में नागर शैली का आधार बना।

गुप्त काल की गुफा स्थापत्य

➔ अजंता की गुफाएं

अजंता की 30 गुफाओं में से कुछ गुप्त काल में बनाई गईं। गुफा संख्या 16, 17, 19 और 26 गुप्त काल की हैं। इन गुफाओं में बौद्ध विहार और चैत्य हैं। गुफा संख्या 19 का चैत्य अत्यंत सुंदर है जिसमें एक स्तूप है और उसके चारों ओर बुद्ध की मूर्तियां हैं। अजंता की भित्ति चित्रकारी विश्व प्रसिद्ध है जो गुप्त काल की चित्रकला की उत्कृष्टता को दर्शाती है।

➔ एलोरा की गुफाएं

एलोरा की कुछ प्रारंभिक गुफाएं गुप्त काल के अंत में बनीं। ये बौद्ध गुफाएं हैं जिनमें विहार और मूर्तियां हैं।

➔ गुप्त कला का प्रभाव और विरासत

गुप्त कला ने भारतीय कला की दिशा निर्धारित की। सारनाथ के बुद्ध की शैली पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया में फैली। थाईलैंड, म्यांमार, श्रीलंका और जावा की बुद्ध मूर्तियों में गुप्त प्रभाव स्पष्ट है। भारत में पाल और सेन वंशों की कला गुप्त परंपरा का विकास है। मंदिर स्थापत्य में गुप्त काल द्वारा स्थापित सिद्धांत बाद की सभी शैलियों में दिखाई देते हैं। नागर, द्रविड़ और वेसर शैलियां गुप्त नींव पर विकसित हुईं।
गुप्त कला ने आध्यात्मिकता और सौंदर्य का जो संतुलन स्थापित किया वह भारतीय कला का आदर्श बन गया। कला केवल भौतिक अनुकरण नहीं बल्कि आध्यात्मिक अनुभव की अभिव्यक्ति है - यह गुप्त कला का संदेश था।

निष्कर्ष

गुप्त काल भारतीय कला और स्थापत्य के इतिहास में स्वर्णिम अध्याय है। इस काल में कला ने अपनी परिपक्वता, संतुलन और आध्यात्मिक गहराई का चरम छुआ। सारनाथ का बुद्ध भारतीय मूर्तिकला की

सर्वोच्च उपलब्धि है जिसमें आध्यात्मिक शांति और भौतिक सौंदर्य का पूर्ण संगम है। देवगढ़ का मंदिर हिंदू मंदिर स्थापत्य की नींव है जिस पर बाद की सभी परंपराएं खड़ी हुईं।

गुप्त कला की विशेषताएं - संतुलन, अनुपात की पूर्णता, कोमलता, आध्यात्मिकता और सादगी - इसे कालजयी बनाती हैं। यह केवल तकनीकी उत्कृष्टता नहीं बल्कि दार्शनिक गहराई और सौंदर्यबोध का प्रतीक है। गुप्त कलाकारों ने पत्थर को इस तरह तराशा कि वह जीवंत हो उठा और दिव्यता को इस तरह मूर्त किया कि वह दर्शक के हृदय को छू जाए।

समकालीन भारत के लिए गुप्त कला एक प्रेरणा है। यह दर्शाती है कि भारतीय सभ्यता ने कला को केवल सजावट नहीं बल्कि आध्यात्मिक साधना माना। गुप्त काल की कला विश्व के प्रमुख संग्रहालयों में संरक्षित है और भारतीय सांस्कृतिक उत्कृष्टता का प्रतीक है। यह हमें सिखाती है कि सच्ची कला संतुलन, सादगी और आध्यात्मिकता में निहित है। गुप्त युग भारतीय इतिहास का स्वर्ण काल था जब कला, साहित्य, विज्ञान और दर्शन सभी अपने चरम पर थे और इसकी विरासत आज भी हमारा मार्गदर्शन करती है।